

नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

जगजीत कौर

शोधार्थी शिक्षा शोध केंद्र – कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई

हेमचंद्र यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)

डॉ मनोज कुमार मौर्य

शोध निर्देशक प्रोफेसर भारती विश्वविद्यालय पुलगांव चौक दुर्ग छत्तीसगढ़

डॉ बनिता सिन्हा

सह शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापक कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई छत्तीसगढ़

सारंश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के 22 जिले में संचालित 22 नवोदय विद्यालयों के कक्षा नवमी के 800 विद्यार्थियों शामिल को किया गया है। न्यादर्श का चयन गैर आनुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के आधार पर किया गया। आँकड़ों का संग्रह करने के लिए स्वअवधारणा के मापन के लिए एस. पी. अहलुवालिया एवं हरिशंकर सिंह द्वारा निर्मित चिल्डरन सेल्फ कान्सेप्ट स्केल एवं शालेय वातावरण के मापन के लिए जगजीत कौर, मनोज कुमार मौर्य एवं बनिता सिन्हा द्वारा निर्मित (स्वनिर्मित) शालेय वातावरण मापनी

का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रसरण विश्लेषण (F) का उपयोग किया गया। परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि शालेय वातावरण का मुख्य प्रभाव सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रस्तावना

बालक का सामाजिक विकास परिवार एवं विद्यालय दोनों ही वातावरण में होता है। प्रारंभिक समय में बालक का विकास परिवार में तथा प्रारंभिक के अवस्था बाद बालक का विकास विद्यालय के वातावरण में होता है। विद्यालय रूपी लघु समाज में रहकर बालक का सम्पूर्ण विकास होता है उसमें स्व-अवधारणा का विकास भी विद्यालय के वातावरण में होता है। **कुमारी एवं वर्मा (2025)** ने पाया गया कि लिंग के आधार पर लड़कियों में स्वअवधारणा उच्च पाया गया। शहरी क्षेत्र के किशोर में स्वअवधारणा, ग्रामीण क्षेत्र के किशोर से उच्च पाया गया। **घोष (2025)** ने पाया कि किशोरों के स्वअवधारणा में सुधार के लिए अनुकूलित शैक्षिक और सामुदायिक वातावरण की आवश्यकता होती है। **पांडे (2023)** ने परिणाम पाया कि लड़के और लड़कियों के स्वअवधारणा में अंतर पाया गया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्वअवधारणा में अंतर पाया गया। **सरफिका (2023)** ने किशोरों के स्वअवधारणा पर एक अध्ययन किया। अध्ययन किशोरों के लिंग, वर्ग स्तर, आयु, माता-पिता की वैवाहिक स्थिति, पिता की शिक्षा और पारिवारिक आय के आधार पर किया गया और इनके आधार पर किशोरों के स्वअवधारणा में अंतर पाया गया। कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **ठाकुर एवं ग्रेवाल (2020)** ने किशोरों के बीच स्वअवधारणा और सामाजिक-संवेगात्मक

स्कूली वातावरण के बी संबंधों पर अध्ययन किया। परिणाम पाया गया कि प्रतिभागियों द्वारा स्कूलों में अनुभव किए गए समग्र स्वअवधारणा और सामाजिक-संवेगात्मक वातावरण के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण, लिंग एवं क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

H₀₁ नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण, लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के 20 जिले में संचालित 20 नवोदय विद्यालयों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा नवमी के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन नवोदय विद्यालय के 800 विद्यार्थी तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण के प्रभाव तक परिसीमित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के 20 जिले में संचालित 20 नवोदय विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन गैर आनुपातिक यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के आधार पर किया गया है। न्यादर्श के रूप में कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध अभिकल्प

स्वतंत्र चर – शालेय वातावरण (उच्च एवं निम्न)

आश्रित चर – स्वअवधारणा

उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में स्वअवधारणा के मापन के लिए एस. पी. अहलुवालिया एवं हरिशंकर सिंह द्वारा निर्मित चिल्डरन सेल्फ कान्सेप्ट स्केल (2012) एवं शालेय वातावरण के मापन के लिए जगजीत कौर, मनोज कुमार मौर्य एवं बनिता सिन्हा द्वारा निर्मित (स्वनिर्मित) शालेय वातावरण मापनी (2023) का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रसरण विश्लेषण (F) का उपयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

H₀₁ नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण, लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 01

नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण, लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण सारांश

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	df	मध्यमान वर्ग	F का मान
शालेय वातावरण	247.61	1	247.61	3.93**
लिंग	64.27	1	64.27	1.02 •
क्षेत्र	75.50	1	75.50	1.20 •
शालेय वातावरण X लिंग	88.77	1	88.77	1.41 •
शालेय वातावरण X क्षेत्र	165.23	1	165.23	2.62 •
लिंग X क्षेत्र	30.07	1	30.07	0.47 •
शालेय वातावरण X लिंग X क्षेत्र	94.90	1	94.90	1.50 •
त्रुटि	49818.96	792	62.90	
योग	3416683.00	800		
संशोधित योग	50578.68	799		
** = 0.05 सार्थकता स्तर, • = सार्थक नहीं				

- शालेय वातावरण का मुख्य प्रभाव

सारणी में प्रदर्शित आंकड़ों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण के मुख्य प्रभाव के लिए F का मान 3.93 ($df=1, 792$) प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। जिसे सारणी में प्रस्तुत किया गया है—

सारणी क्रमांक 02

उच्च एवं निम्न शालेय वातावरण वाले विद्यार्थियों के स्वअवधारणा का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

शालेय वातावरण	उच्च	निम्न
M	65.38	62.24
SD	8.59	7.23
N	432	368

सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च शालेय वातावरण वाले विद्यार्थियों का स्वअवधारणा, निम्न शालेय वातावरण वाले विद्यार्थियों के स्वअवधारणा से अधिक पाया गया।

• लिंग का मुख्य प्रभाव

सारणी को देखने से पता चलता है कि लिंग के मुख्य प्रभाव के लिए F का मान 1.02 ($df=1,792$) प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर स्तर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः लिंग के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

• क्षेत्र का मुख्य प्रभाव

सारणी से यह पता चलता है कि क्षेत्र के मुख्य प्रभाव के लिए F का मान 1.20 ($df=1,792$) प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः क्षेत्र के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अंतः क्रियात्मक प्रभाव

• शालेय वातावरण x लिंग का अंतः क्रियात्मक प्रभाव

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शालेय वातावरण x लिंग के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान 1.41 ($df=1,792$) प्राप्त हुआ, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। अतः शालेय वातावरण x लिंग के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शालेय वातावरण x क्षेत्र का अंतः क्रियात्मक प्रभाव

सारणी के से स्पष्ट होता है कि स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान 2.62 (df=1,792) प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। शालेय वातावरण x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

- **लिंग x क्षेत्र का अंतः क्रियात्मक प्रभाव**

सारणी को देखने से पता चलता है कि लिंग x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान 0.47 (df=1,792) प्राप्त हुआ, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर के सार्थक नहीं है। लिंग x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शालेय वातावरण x लिंग x क्षेत्र का अंतः क्रियात्मक प्रभाव

सारणी में प्रदर्शित आंकड़ों को देखने से स्पष्ट होता है कि शालेय वातावरण x लिंग x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान 1.50 (df=1,792) प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। शालेय वातावरण x लिंग x क्षेत्र के अंतः क्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। उच्च शालेय वातावरण वाले विद्यार्थियों की स्वअवधारणा, निम्न शालेय वातावरण वाले विद्यार्थियों की स्वअवधारणा से अधिक पायी गयी। स्वअवधारणा पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। लड़के एवं लड़कियों के स्वअवधारणा में कोई अंतर नहीं पाया गया। स्वअवधारणा पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की स्वअवधारणा में कोई अंतर नहीं पाया गया। स्वअवधारणा पर शालेय वातावरण x लिंग, शालेय वातावरण x क्षेत्र, लिंग x क्षेत्र एवं शालेय वातावरण x लिंग x क्षेत्र का अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

संदर्भ—ग्रंथ

- Kumari K.& Verma N. (2025).** A study on self - concept, self – esteem and practical differences. *International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends*, 2 (3), 812-821.
- Ghose, N. (2025).** A study on the self - concept of adolescent girls in small – scale fishing communities in kerala, India. *Indian psychological Review*, 80 (4), 216-219.
- Panday, K. N. (2023).** A study of self - oncept among urben and rural area college student in relation to their gender in varanasi U.P. *IJAR*, 9 (10), 170-176.
- Sarfica, J. (2023).** study on adolescent self – concept. *Indian psychological Review*, 3 (2), 17-20.

Thakur, R. & Grewal, S. (2020). Self – concept and socio – emotional school climate among adolescents : A descriptive study in Ludhiyana district. *International Research on Advanced Science Hub*, 2 / (special issue), 68-72.

Ahluwalia, S. P. & Singh, Hari Shankar (2020). Children’s self concept scale. *Indian psychological Corporation*.

राय, पारसनाथ (2006). अनुसंधान परिचय, *लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन एवं विक्रेता*, द्वादशम संस्करण, 302, 306.

वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. (1982). बाल मनोविज्ञान : बाल विकास, *विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*, नवीनतम संस्करण, 509–521.

कौर, जगजीत, मौर्य, मनोज कुमार एवं सिन्हा बनिता (2023). शालेय वातावरण मापनी, (स्वनिर्मित).